Introduction.

:: प्राक्कथन ::

ईश्वर की इस समूची सृष्टि में मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वोपरि माना गया है, क्योंकि उसे सृष्टि का श्रेष्ठ वरदान — वाणी का वरदान — सम्प्राप्त हुआ है। वाणी या बोली तो कुछेक मनुष्येतर प्राणियों के पास भी है, परन्तु मनुष्य ने अपनी बोली को भाषा के रूप में परिवर्तित किया, और साहित्य इसी भाषा का भंडार है। शास्त्रों के अध्ययन से ज्ञान प्राप्त होता है, साहित्य से ज्ञान-प्राप्ति तो होती ही है, परन्तु यह उसका आनुषांगिक लाभ है। साहित्य का मूल कार्य तो मनुष्य की चित्त-वृत्तियों का परिष्कार एवं संस्कार है। साहित्य का अध्ययन मनुष्य में एक ऐसे सौन्दर्य-बोध को जाग्रत करता है जिसके आलोक में समूची मानवता दीप उठती है। वह सिखाता नहीं, मनुष्य को परिचालित करता है। गुजराती में एक काव्य-पंक्ति मिलती है — "हुं मानवी, मानव थाउं तो घणुं" — अर्थात् मैं मनुष्य तो हूं, पर सच्चा मनुष्य बनूं तो क्या ही अच्छा हो। हम सब लोग मनुष्य योनि में जन्म अवश्य लेते हैं, परन्तु मनुष्य की गरिमा का स्पर्श नहीं कर पाते। यह मनुष्य को मनुष्य बनानेवाली, उसे परिष्कृत एवं संस्कारित करने वाली जो विद्या है, उसीका नाम साहित्य है।

अतः अपने शैक्षिक जीवन के प्रारंभ से ही साहित्य के प्रति मेरी विशेष रुचि रही है। मेरे माता-पिता खास उत्तर-प्रदेश के रहने वाले हैं, परन्तु "तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग" (Oil and Natural Gas Commission) में सेवारत होने के कारण मेरी प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा गुजरात के खंभात तथा अंकलेश्वर जैसे शहरों में हुई। फलतः हिन्दी के साथ-साथ गुजराती से भी

यत्किंचित परिचित हुई । अभियंता होने के बावजूद मेरे पिता ने अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. किया है । मेरी मातुश्री ने हिन्दी साहित्य में बी.ए. किया है तथा मेरे दादा के भाई अपने समय के संस्कृत के बड़े पंडितों में रहे हैं । अभिप्राय यह कि मेरे घर का परिवेश साहित्यिक संस्कारों से परिपोषित एवं पुष्ट रहा है । माध्यमिक शिक्षा के बाद पिताजी की बदली के कारण मेरी बी.ए. तक की शिक्षा गढ़वाल विश्वविद्यालय के देहरादून कालेज से हुई , जिसमें मेरे मुख्य विषय थे हिन्दी साहित्य और इतिहास । बाद में पुनः अंकलेश्वर {गुजरात} आना हुआ , अतः एम.ए. हिन्दी साहित्य के साथ , महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय से किया । एम.ए. में मेरा विशेष-पत्र था उपन्यास । फलतः हिन्दी विभाग के प्रोफेसर डा. पारुकांत देसाई साहब से मेरा परिचय हुआ । डाक्टर साहब की साहित्यिक निष्ठा एवं छात्र-वत्सलता प्रसिद्ध है । अतः मैंने निश्चय किया कि एम.ए. के उपरांत यदि आगे शोध या अनुसंधान का अवसर मिला तो उनके ही मार्गदर्शन में शोध-कार्य करूंगी । अतः एम.ए. करने के बाद मैंने उनसे इस संबंध में भेंट की । दो-तीन बैठकों में पूरी शोध-प्रविधि से परिचित कराते हुए तथा मेरी अभिरूचि तथा गति को देखते हुए उन्होंने मुझे विषय दिया -- "शैलेश मटियानी की कहानियों में नारी के विविध रूपों का चित्रण " ।

मेरठ के बासिन्दे होने के कारण तथा देहरादून में महाविद्यालयीय शिक्षा पाने के सबब , मेरा उत्तर-प्रदेश के उत्तरा-खण्ड से विशेष लगाव रहा है । उपरोक्त विषय के चुनाव में यह भी एक कारण रहा है । मटियानीजी की गणना हिन्दी-कथाकारों में एक अच्छे शैलीकार के रूप में होती रही है । अपने छात्र-जीवन में ही "प्रेत-मुक्ति" , "मैमूद" , "मिट्टी" , "दो दुखों का एक सुख " , "इब्बू मलंग " , "काला कौआ" प्रभृति कहानियों को पढ़ने का अवसर मिला था , अतः यह विषय मुझे मेरी अभिरूचि के अनुसार

लगा ।

विषय-चयन के उपरांत देसाई साहब ने चार-पांच प्रकाशित-अप्रकाशित शोध-प्रबंधों को देख जाने के लिए कहा तथा डा. भारतभूषण अग्रवाल एवं एस.एन. गणेशन के प्रकाशित शोध-प्रबंध क्रमशः "हिन्दी उपन्यासों पर पाश्चात्य प्रभाव " तथा " हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन " को लेकर प्रत्यक्षतः शोध-विधि एवं शोध-प्रक्रिया के वास्तविक पहलुओं से परिचित करवाया । तत्पश्चात् "शोध-प्रविधि" (आचार्य विनयमोहन शर्मा), "शोध और सिद्धान्त " (डा. नगेन्द्र) . "साहित्यिक अध्ययन की दृष्टियाँ" (डा. उदयभानुसिंह), "हिन्दी अनुसंधान : स्वरूप और विकास" (सं. प्रो. बी.एच. राजुरकर तथा डा. राजमल बोरा) आदि कुछ शोध-विषयक ग्रन्थों को पढ़ जाने का निर्देश दिया । इस प्रकार आठ-नौ महीनों के प्रारंभिक प्रशिक्षण के बाद पी-एच.डी. के लिए उक्त विषय को लेकर मेरे नाम का पंजीकरण हो गया ।

जब मेरा विषय पंजीकृत हो गया तब मैं बड़ी प्रसन्न हुई, परन्तु शनैःशनैः यह अनुभव होने लगा कि साहित्य में शोध या अनुसंधान का कार्य सहज-सरल नहीं है । इसमें अपने गंतव्य तक पहुँचने के लिए बहुत ही परिश्रम करना पड़ता है । अनेक विद्वानों के शोध-प्रबंधों , शोध-ग्रन्थों तथा आलोचना-ग्रन्थों से दो-चार होना पड़ता है । ~~विषयxibx~~ विषय से सम्बद्ध उपजीव्य-ग्रन्थों को शब्दशः न केवल एक बार , प्रत्युत कई-कई बार देख जाना पड़ता है । मेरा विषय शैलेश मटियानी की कहानियों से सम्बद्ध है । अतः सर्वप्रथम तो शैलेश मटियानी के कहानी-संग्रहों की खोज प्रारंभ हुई । इस उपक्रम में "मेरी तैंतीस कहानियाँ " (आत्माराम एण्ड सन्स), "भेड़ें और गड़रिये " , "छिद्दा पहलवान वाली गली" , "चील" , "त्रिज्या" , "पापमुक्ति तथा अन्य कहानियाँ ",

"अतीत तथा अन्य कहानियाँ" , "अहिंसा तथा अन्य कहानियाँ", "सुहाग्नि तथा अन्य कहानियाँ" , "हारा हुआ" , "बर्फ की चट्टानें" , "बर्फ की चट्टानें (बड़ा संकलन , सचीन प्रकाशन , दिल्ली) , "भविष्य तथा अन्य कहानियाँ" जैसे लगभग पन्द्रह-सोलह कहानी-संग्रह प्राप्त हुए । इनमें कहीं-कहीं ऐसा भी हुआ है कि एक संग्रह में जो कहानियाँ प्राप्त होती हैं , उनमें से कुछेक कहानियाँ अन्य कहानी-संग्रहों में भी उपलब्ध होती हैं । "बर्फ की चट्टानें" के बड़े संकलन में कुमाऊँ के पहाड़ी प्रदेश से सम्बद्ध प्रायः सभी कहानियाँ मिलती हैं , जो उनके अन्यान्य संग्रहों में भी पायी जाती हैं । यों कुल ~~मिलxxxx~~ मिलाकर तकरीबन 175 कहानियाँ होती हैं । लेखक के आलोचनात्मक ग्रन्थों में "जनता और साहित्य" , "मुख्यधारा का सवाल" , "त्रिज्या" , "लेखक और संवेदना" , लेखक की हैसियत से" प्रभृति ग्रन्थ प्राप्त होते हैं । बहरहाल इन सब ग्रन्थों के अध्ययन-अनुशीलन के परिपाक स्वरूप में इस प्रबंध को उसके वर्तमान रूप में प्रस्तुत कर पायी हूं ।

मेरे इस कार्य में आदरणीय डाक्टर साहब के अतिरिक्त विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापकों ~~का~~ — डा. पी.एन. झा , डा. प्रेमलता बाफना , डा. बंसीधर (अब निवृत्त) , डा. अनुराधा दलाल , डा. भगवानदास कहार तथा पादरा कालेज के आचार्य डा. वामन अहिरे साहब — का मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन मिला है । इनके अतिरिक्त प्रो. मदनगोपाल गुप्तजी , प्रो शिवकुमार मिश्रजी , प्रो. कुंजबिहारी वार्ष्णेय , प्रो. सितांशु यशश्चन्द्र प्रो. गणेश देवी तथा प्रो सिद्दीकी साहब से भी यदा-कदा साहित्यिक विमर्श एवं प्रोत्साहन सम्प्राप्त होते रहे हैं । अतः यहाँ उन सबके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं । अपनी इस शोध-यात्रा के दरमियान हंसा मेहता लायब्रेरी , सेन्ट्रल

लायब्रेरी , जयसिंहराव लायब्रेरी तथा डा. देसाई की व्यक्तिगत लायब्रेरी का मैंने उपयोग किया है । अतः उन सबके अधिकारियों के प्रति तथा मिसेज देसाई के प्रति आभार व्यक्त करना मैं अपना परम कर्तव्य समझती हूँ । अध्ययन की सुविधा तथा तथ्यों की समुचित नियोजना हेतु प्रस्तुत प्रबंध को निम्नलिखित छः अध्यायों में विभक्त किया है :—

(1) विषय-प्रवेश
(2) शैलेश मटियानी का कहानी-साहित्य : नारी-चित्रण के विशेष परिप्रेक्ष्य में
(3) शैलेश मटियानी की ग्राम्य-परिवेश की कहानियों में नारी के विविध रूप
(4) शैलेश मटियानी की नगरीय-परिवेश की कहानियों में नारी के विविध रूप
(5) शैलेश मटियानी की कहानियों में चित्रित विशिष्ट नारी-चरित्र
(6) उपसंहार

— प्रथम अध्याय "विषय-प्रवेश" का है । प्रस्तुत प्रबंध शैलेश मटियानी की कहानी विधा को लेकर है , अतः बहुत संक्षेप में हिन्दी कहानी के विकास को रेखांकित किया गया है । मटियानीजी का लेखन-काल विगत चार-पाँच दशकों में विस्तीर्ण है , अतः कहानी के विकास की चर्चा करते हुए समकालीन कहानी के कतिपय आयामों को चिह्नित किया गया है , साथ-ही-साथ कहानी-विषयक विभावना को स्पष्ट करने का उपक्रम भी रहा है । मटियानीजी की कहानियों में जो नारी-चरित्र मिलते हैं वे पिछले 50-100 वर्षों से सम्बद्ध हैं , अतः उन युगीन परिस्थितियों को रेखांकित करना आवश्यक हो गया जिनमें इन नारी-

पात्रों का यथार्थ छिपा हुआ है । यद्यपि मूल मानवीय चित्त-वृत्तियों में अधिक परिवर्तन नहीं आता, तथापि उसके आचार-विचार, रहन-सहन, आशा-आकांक्षा इत्यादि में बाह्यतः जो परिवर्तन लक्षित होते हैं, उसके मूल में कई सारे तथ्य अन्तर्निहित होते हैं । मटियानीजी में परंपरागत नारी-पात्र भी मिलते हैं और कई-एक आधुनिक नारी-पात्र भी मिलते हैं । अतः नारी-चेतना को विकसित करने वाली आधुनिक प्रवृत्तियों का भी संक्षेप में दिग्दर्शन कराया गया है । इनमें आर्यसमाज, ब्रह्मसमाज, प्रार्थनासमाज, थियोसोफिकल सोसायटी जैसी सामाजिक-धार्मिक संस्थाओं तथा विवेकानंद, रामकृष्ण परमहंस, महर्षि अरविन्द, ज्योतिबा फुले, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, राजा राममोहनराय, केशवचन्द्र सेन, महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, प्रेमचन्द, पंडिता रमाबाई, सावित्रीबाई फुले, मदाम कर्वे, श्रीमती एनी बेसण्ट प्रभृति महानुभावों के उन-उन प्रयत्नों को रेखांकित किया गया है जिनसे नारी-चेतना के विकास में अभिवृद्धि हुई है । प्रस्तुत अध्याय में मटियानीजी के कहानी-साहित्य में सम्प्राप्त नारी-चरित्रों का संक्षिप्त एवं विहंगम विश्लेषण भी किया गया है । विशेषतः नारी-चरित्रों को उभारनेवाली कहानियों का उल्लेख भी यहां किया गया है । अध्याय के अन्त में निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं ।

द्वितीय अध्याय में मटियानीजी के कहानी-साहित्य को नारी-चरित्रों के विशेष परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित किया गया है । यहां केवल उन कहानियों को केन्द्र में रखा गया है, जिनका संबंध नारी-जीवन की किसी-न-किसी समस्या से रहा हो । मटियानीजी की कहानियों में प्रायः दो प्रकार का परिवेश मिलता है — 1. पहाड़ी परिवेश तथा 2. नगरीय परिवेश । पहाड़ी परिवेश की कहानियों में "पोस्टमैन", "भंवरे की जात", "बर्फ की चट्टानें ", "घर-गृहस्थी", " नंगा ", कालिकावतार", "माटी"

"सुहागिनी" , "अर्द्धांगिनी" , "कपिला" , "मिसेज ग्रीनवुड" आदि लगभग 25-30 कहानियाँ आती हैं ।

मटियानीजी का जीवन अत्यंत संघर्षशील रहा है । इसी उपक्रम में दिल्ली , बम्बई , इलाहाबाद , कलकत्ता , लखनऊ , अल्मोड़ा , नैनिताल प्रभृति शहरों की खाक उन्हें छाननी पड़ी है । अतः उनकी कहानियों में नगरीय परिवेश भी मिलता है । उनकी इस तरह की कहानियों में "प्यास" , "इब्बू मलंग " , "इलैस्वामी" , "मिट्टी" , "दैट माय फादर बानजी " , "जिसकी जरूरत नहीं थी" , "बिट्ठल" , "चिथड़े" , "एक कोप या : दो खारी बिस्किट" जैसी लगभग 20-22 कहानियों को विश्लेषित किया गया है ।

यद्यपि मानव-जीवन की मूलभूत वृत्तियाँ [Basic instincts] सर्वत्र एकरूप-सी होती हैं ; तथापि रहन-सहन , आचार-विचार , परिस्थितियाँ आदि की दृष्टि से ग्राम्य एवं नगरीय जीवन में हमेशा एक निश्चित अंतर पाया जाता है । महिलाओं में शिक्षा का प्रचार-प्रसार भी ग्रामीण विस्तारों में अपेक्षाकृत कम मिलता है । उच्च-शिक्षा का प्रभाव तो नहींवत् होता है । नगरों में कहीं-कहीं ऊँचे पदों पर महिलाएँ मिलती हैं । ग्रामीण परिवेश में नौकरीयाफ्ता स्त्री-पात्रों में अधिक-से-अधिक शिक्षिका , ग्रामसेविका या मीडवाइफ के पद पर काम करने वाली महिलाएं मिलती हैं । ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांशतः घर तथा खेतीबाड़ी का काम करनेवाली महिलाएँ पाई जाती हैं । मटियानीजी के कथा-साहित्य में अधिकांशतः पहाड़ी ग्रामीण परिवेश मिलता है । ~~मरड़x~~ बाड़ेछीना , राबछीना , लिमकुड़ी , कमस्यारी, चितई , सिलगड़ी , गुम्याली , ऊँचयाली , पंतोली आदि कुमाऊँ प्रदेश के गाँवों में स्त्रियों का जो जीवन मिलता है , उसका यथार्थ आलेखन मटियानीजी की कहानियों में हुआ है । आचार्य हजारीप्रसाद

द्विवेदीजी कहा करते थे कि यदि कोई उत्तर-प्रदेश के ग्रामीण-जीवन का परिचय प्राप्त करना चाहें तो प्रेमचन्द से उत्तम परिचायक उन्हें कोई दूसरा नहीं मिलेगा । ठीक इसी तरह मटियानीजी के विषय में हम कह सकते हैं कि कुमाऊं प्रदेश का ग्रामीण-जीवन , उसका रहन-सहन, उनका आचार-विचार , उनके रंग-ढंग , उनके विश्वास-अविश्वास , उनकी आशाएं-आकांक्षाएं , उनके रस्मो-रिवाज , उनके देवी-देवता प्रभृति का यथार्थ चित्र हमें मटियानीजी के कथा-साहित्य में मिलता है । अतः इस तृतीय अध्याय में कुमाऊं प्रदेश के ग्रामीण-परिवेश में जो नारी-पात्र उपलब्ध होते हैं , उन्हें वर्गीकृत किया गया है । कुमाऊं प्रदेश के ही अल्मोड़ा , नैनिताल आदि शहरों के नारी-पात्रों को परवर्ती अध्याय में समेकित किया गया है । यहां हमें फौजी पत्नियां , फौजी माताएं , थोकदारीनियां , पधानियां , ठकुराइनें , नौनियां , सपत्नियां , महतारियां , सासें , बहुएं , भौजियां , बहनें , नारी-वंचना से ग्रसित स्त्रियां , महिमामयी नारियां , जिनके पेट में कोई बात पचती नहीं है ऐसी चंचल स्वभाव की पतले पेटवाली नारियां , कामकाजी महिलाएं , दलित-वर्ग की नारियां , उच्च-वर्ग की नारियां इत्यादि विभिन्न वर्ग एवं वर्ष की नारियां मिलती हैं । —

यहां एक तथ्य ध्यातव्य है कि मटियानीजी एक स्मृतिजीवी लेखक हैं , अतः उनके लेखन में न केवल साम्प्रतिक कुमाऊं प्रदेश का जीवन समाविष्ट होता है , अपितु विगत 100-125 वर्षों का जीवन भी इन कहानियों में कहीं-न-कहीं प्रतिबिंबित होता है । अतः यहाँ ऐसे "पधान" और "थोकदार" मिलते हैं , जिनके एकाधिक पत्नियाँ होती थीं । ग्रामीण परिवेश में नारी अधिकांशतः पुरुष पर निर्भर न होकर उत्पादक कार्यों में पुरुषों का बराबर-बराबर हाथ बंटाती हैं । अतः यहां हमें कुछ ऐसे नारी-पात्र मिलते हैं जो परिवार के टूटने-बिखरने पर उसकी बागडोर संभाल लेते हैं और अदम्य उत्साह और

जीवट का परिचय देते हैं ।"खरबूजा" , "कुसुमी" , "बारूद और बच्ची" , "पापमुक्ति" , "कपिला" , "कालाकौआ" , "घर-गृहस्थी", "नंगा" , "असमर्थ" आदि कहानियों में नारी का यह संघर्षशील रूप हमें सम्प्राप्त होता है ।

पहाड़ी गांवों में बहुत से जवान सेना में भरती हो जाते हैं । अतः इन कहानियों में फौजी जीवन से जुड़े हुए नारी-पात्र भी मिलते हैं । उनके सुख-दुःख , उमंग-उल्लास और साथ ही साथ एक दहशतजदा यन्त्रणा को भी लेखक ने भलीभाँति चित्रित किया है । दलित, शोषित एवं जरायमपेशा औरतों के चित्र भी यहाँ मिलते हैं । संक्षेप में प्रस्तुत अध्याय में ग्राम्य-परिवेश में नारी के जो विविध रूप मिलते हैं उन्हें विश्लेषित एवं व्याख्यायित करने का प्रयत्न रहा है ।

चतुर्थ अध्याय में नगरीय परिवेश से सम्बद्ध नारी-चरित्र के विविध रूपों को उकेरा गया है । नगरीय परिवेश के अन्तर्गत बम्बई , दिल्ली , इलाहाबाद , अल्मोड़ा इत्यादि नगरों के नारी-चरित्रों को समाविष्ट किया गया है । यहाँ पर उच्चवर्गीय , मध्यवर्गीय , निम्न-मध्यवर्गीय नारी-चरित्रों में पाई जाने वाली अनेकविधता को , उनके विचारों और मान्यताओं को रेखांकित करने का यत्न किया गया है । निम्नवर्ग के अन्तर्गत शहरों में छोटे-मोटे कारखानों में काम करने वाली महिलाएं , दूसरों के घरों में झाड़ू-बरतन-कपड़ा करने वाली महिलाएं , छोटे-मोटे और धंधे करने वाली महिलाएं , शरीर का सौदा करने वाली वेश्याएं , अपाहिज कोढ़िन तथा भिखारिन महिलाएं विशेष रूप से पाई जाती हैं । मटियानीजी ने इनका लोमहर्षक यथार्थ वर्णन किया है । जातिगत एवं प्रादेशिक रूप से विचार किया जाय तो मटियानीजी के शहराती नारी-संसार में

पहाड़ी ठकुराइनें , पंडिताइनें , गौराइनें , ब्राह्मणियां ; गुजराती सेठानियां ; पारसी महिलाएं तथा ईसाई मेमें मिलती हैं । इन सबमें परिवेशगत विशेषताओं को चिह्नित किया गया है । बड़े अफसरों की ख्वाब गालिब करने वाली बीबियां भी इनमें शामिल हैं । संक्षेप में भारत के नगरों में पाया जाने वाला नारी-वैविध्य यहां है । परन्तु एक बात यहां विशेष ध्यानार्ह होगी कि जहां भी मटियानीजी ने किसी संघर्षशील नारी का चित्रण किया है , वहां उनकी संवेदनाएं , मानवीय भावनाओं को छूती हुई-सी प्रतीत होती हैं । इन चरित्रों में मानवीय संस्पर्श श्लाघनीय जान पड़ता है । "महाभोज" , "चील", "अहिंसा" , "मिट्टी" , "दैट माय फादर बालजी " , "एक कोप चा : दो खारी बिस्किट " , "भविष्य" आदि कहानियां इस दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं । अपनी अनुभवगत सीमा के कारण नगरीय-परिवेश में लेखक ने अभिजात नारी-पात्रों की तुलना में निम्नवर्गीय संघर्षशील नारी-पात्रों को अधिक लिया है ।

पंचम अध्याय विशिष्ट नारी-चरित्रों को लेकर लिखा गया है । यहां पर ग्रामीण एवं नगरीय उभय परिवेश के कुछ ऐसे नारी-पात्रों को उकेरा गया है जो जीवट , जुझारूपन, संघर्षशीलता , परिश्रम , अध्यवसाय , चारित्रिक निष्ठा , उच्च मानवीय आदर्श , भावनाशीलता , धैर्य , साहस प्रभृति की दृष्टि से विशिष्ट बन पड़े हैं । ये नारी-चरित्र सभी वर्ग और वर्ण से आये हैं । पद्मावती , कमलावती , परतिमा चाची , लाटी, लछिमा , कृष्णाबाई , सत्नारायणी , जद्दन , कपिला , सावित्री, गोपुली , शिवरत्ती , बिन्दा , गंगाबाई , कुंतुली , दुर्गा , गोमती , मिसेज ग्रीनवुड आदि लगभग 25-30 नारी-चरित्रों का आकलन यहां हुआ है । इन नारी-चरित्रों में नारी का गरिमामय एवं महिमामय पक्ष उद्घाटित हुआ है । यहां लेखक की दृष्टि

पूर्वक्षेप मानवतावादी रही है और इन नारी-पात्रों के समाकलन में उन्होंने कलागत संतुलन और संयम बरता है ।

अंतिम अध्याय "उपसंहार" का है , जिसमें समग्र प्रबंध के समीचीन अवलोकन के उपरांत कतिपय निष्कर्षों का सारथ किया गया है । प्रबंध का समग्र आकलन , प्रस्तुत अध्ययन की उपादेयता , उसकी उपलब्धियां तथा उसकी भविष्यत् संभावनाओं को उकेरने का यहां एक नम्र , निष्ठापूर्ण एवं प्रामाणिक प्रयास हुआ है ।

प्रत्येक अध्याय के अन्त में उसके समग्रावलोकन पर आधारित निष्कर्षों को प्रस्तुत किए गए हैं । अध्याय के अंत में , जहां मटियानीजी की कहानियों को लेकर विवेचना हुई है , सन्दर्भानुक्रम के अन्तर्गत कहानी तथा उसके संग्रह के नाम को रखकर उसे अधिक उपयोगी एवं वैज्ञानिक बनाने का यत्न किया गया है ।

प्रबंध के अन्त में "सन्दर्भिका" । बिब्लियोग्राफी । के अन्तर्गत विभिन्न परिशिष्टों में -- उपजीव्य कहानी-संग्रहों की सूची , हिन्दी के सहायक-ग्रन्थों की सूची , अंग्रेजी के सहायक-ग्रन्थों की सूची तथा पत्र-पत्रिकाओं की सूची को यथासंभव अकारादि क्रम में रखा गया है ।

मेरे इस शोध-कार्य से हिन्दी के शोध-अनुसंधान तथा ज्ञान के नूतन क्षितिजों के उद्घाटन में [illegible] किंचिद् भी योग हुआ हो और भविष्य के अनुसंधित्सु यदि इससे अल्पांश मात्रा में भी लाभान्वित होंगे तो मैं अध्ययन-श्रम को सार्थक समझूंगी । जिन-जिन विद्वानों के ग्रन्थों से मैं प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूप से लाभान्वित हुई हूं , उन सबके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मेरा परम कर्तव्य है ।

इस कार्य को संपन्न करने में मेरे माता-पिता , मेरे सास-ससुर , मेरे पति जयेश शर्मा तथा मेरे छोटे शिशु का योगदान भी नगण्य नहीं है । समय-समय पर उनके द्वारा किए गए उत्साह-वर्द्धन से मुझे नैतिक बल प्राप्त हुआ है ।

मेरे समानधर्मा गुरु भाई-बहनों का भी मैं हृदयपूर्वक आभार मानती हूं , क्योंकि उनके कार्यों तथा उत्साह ने मेरे शोध-पथ को आलोकित किया है ।

इस समूची शोध-प्रविधि में मेरे निर्देशक प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा. पारुकान्त देसाई के मार्गदर्शन , अध्यवसाय तथा विषय-प्रतिश्रुतता ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है । उनके कारण ही अपने गंतव्य की ओर मैं पग-पग बढ़ने में सफल हो सकी हूं । पिछले साल भयंकर अकस्मात से वे बाल-बाल बचे हैं । ऐसी स्थिति में भी उन्होंने मुझे धैर्य बंधाया है । डाक्टर साहब की छात्र-वत्सलता तथा ज्ञान-निष्ठा विश्रुत है । मैंने अनेक बार अनुभव किया है कि अपने शोध-छात्रों को समय देने के विषय में उन्होंने अपनी सुविधा-असुविधा को ध्यान में न लेते हुए छात्रों की सुविधा-असुविधा को ही तरजीह दी है । उनके इस मूल्यवान मार्गदर्शन के अभाव में यह शोध-कार्य शायद ही संभव हो पाता । अतः उनके प्रति मैं पूर्णरूपेण श्रद्धावनत हूं ।

मेरे शक्ति-सामर्थ्य की सीमाओं का मुझे अभिज्ञान है । अतः त्रुटियों के लिए पहले ही क्षमा-याचना ज्ञापित करती हूं । वस्तुतः अब ज्ञात हो रहा है कि पी-एच.डी. उपाधि हेतु किया जाने वाला शोध-कार्य तो , शोध-अनुसंधान तथा साहित्य-समीक्षा एवं साहित्य-विमर्श की दिशा में अग्रसरित प्रथम चरण

है। अभी-अभी कुछ आँखें खुल पाई हैं। ज्ञान के विश्व का कोई ओर-छोर नहीं है। अतः मैं परम कृपालु ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि वे मुझे इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए उत्प्रेरित करें। अन्त में डाक्टर साहब की ही काव्य-पंक्तियों को किंचित् परिवर्तन के साथ प्रस्तुत करते हुए विरमती हूँ।-

> " मैं चलती हूँ, क्योंकि चलने से मन की आँखें खुल जाती हैं;
> मैं चलती हूँ, क्योंकि चलने से मन की गाँठें खुल जाती हैं। "

दिनांक : 30-4-99
वैशाख शुक्ल पूर्णिमा

विनीत,

(सुषमा शर्मा)